सोच में इजाफा

सदीनामा

www.sadinama.in

ISSN : 2454-2121

वर्ष-20 ○ अंक-5 ○1 से 31 मार्च 2020 ○पृष्ठ-28 ○ R.N.I. No. WBHIN/2000/1974 ○मूल्य - 10 रुपए

Delayed action by cops led to riots spiralling out of control

Courtsy : TOI, KOLKATA-FEB-PAGE-8

Situation Was Fully Managed Only After NSA Doval Stepped In

were not only attacking each other, but also police. In some places, police were caught in the middle, and in others it was a three-sided combat. However, there was limited use of fire-arms," attested a source.

DCP (Shahdara) Amit

कुचबिहार लिटिल मैगनीज मेला 7, 8 मार्च तोषा साहित्य संस्था द्वारा राजबाड़ी के पास मैदान में सम्पन्न किया गया इस मेले का उद्घाटन कवि, लेखिका, सोशल वर्कर मंदाक्रान्ता सेन द्वारा किया गया। इस मेले में लगभग 80 के पास स्टाल थे जिसमें सदीनामा एकमात्र हिन्दी स्टाल था। इसके आयोजक मानस चक्रवर्ती और सैकत और तोषा साहित्य की पूरी टीम ने मिलकर बड़े सुचारू-रूप से सम्पन्न किया।

सम्पादकीय

हिंसा के बाद : अहिंसा परमो धर्म

महाभारत के युद्ध के बाद जो वेद वाक्य निकल कर आया था, अहिंसा परमो धर्म:। अब अगर यह पहले ही यह समझ जाते जो इतना नुकसान न होता। हमने गुजरात के दंगों के बाद बने पोस्टर वायज की खोज की दोनों का वर्तमान का चित्र कवर पर है। पिछले दिनों उनमें एक ने जूतों की दुकान खोली और दूसरे ने उसका उद्घाटन किया (मेरे लिए दोनों सिर्फ हिन्दुस्तानी है इसलिए नाम नहीं लिख रहा। दंगे किसी भी रोग का इलाज नहीं और नहीं किसी की स्थायी सुखी का उपाय। हर एक को पछताना पड़ता है। दंगे कोई विरासत नहीं, क्योंकि इन दंगों का वैश्विक स्वरूप कुछ अलग ही है, कहीं बौद्ध-दंगा कहीं काला-गोरा। भीड़ की मानसिकता में व्यक्ति विवेक खो देता है। उम्मीद है हम भीड़ का हिस्सा होने से बचे पर यह संभव नहीं, जब लोगों को भीड़ जमा करके प्रभाव डालना एक अच्छा प्रयास लगता है, हाल के दंगों ने यह सिद्ध किया कि लम्बे समय तक आंदोलन चलने का क्या दुष्परिणाम हो सकता है। देश भर में जगह-जगह लोग इकट्ठे होते गए, लोगों के बयान आने लगे। हमें उम्मीद है लोगों को आजादी के आंदोलन के समय की चौराचौरी घटना याद होगी, अहिंसक भीड़ कैसे हिंसक हो गयी, लोगों की भावनाओं से खेलना और अफवाहों को सच मानना दोनों ही सभ्य समाज के लिए कलंक है पर ये ही आज की सच्चाईयाँ हैं।

राजनैतिक दलों को भी संतुलन चाहिए और सच सच लोगों का बताना चाहिए। यह भी बताना चाहिए कि 1953 (नागरिकता कानून) के बाद भी कैसे लोगों को जमीनों के पट्टे 1967 तक नहीं मिले। दोनों सरकारों ने अल्प संख्यकों का कितना सम्मान किया अब कोट आदरणीय लालकृष्ण आडवाणी से पूछे कि पाकिस्तान के गांधी जिन्नाह को सेक्युलर कहने के बाद उन्होंने जो विरोध झेला वह कितना कष्टदायक था। कायेदआजम की मृत्यु के बाद नागरिकता कानून (1953) का सम्मान पाकिस्तान में कौन करता? योगेन्द्र नाथ मंडल पाकिस्तान से भागकर भारत आ चुके थे। सारा मामला इक तरफा होकर रह गया। यह मामला इस तरह कि मुझसे कोई मेरे माँ-बाप की शादी का रजिस्ट्रेशन मांग ले।

राज्य सरकारों को मुद्दा पर सच - झूठ के आधार पर फैसले लेने चाहिए, जो नहीं हो रहा है।

अगर गलत है तो परहेज हो अगर सही है तो स्वीकारें। मुद्दे और भी हैं उनको देखे या राजनैतिक विरोध में अंधे न हों।

सोशल आने के बाद सबको अपनी-अपनी घृणा फैलाने की खिड़की मिल गई है। जो तो, जहाँ - तहाँ अपने जैसे लोगों का ग्रुप बना लेता है और उसके बाद शुरु होती है घृणा फैलाने की सामूहिक प्रक्रिया।

एक-एक समूह में भेजे गये मैसेज दूसरे ग्रुप में पढ़े नहीं जा सकते, यही विडम्बना है। घृणा फैलाने वालों को पकड़ना मुश्किल हो गया है। वैसे भी यह काम सरकारों का है, मेरे जैसे लोग सिर्फ लिख सकते हैं और कह सकते हैं।

मीडिया की इकतरफा रिपोर्टिंग ने कोढ़ में खाज का काम किया है। चैनलों पर बातचीत का स्तर गिर रहा है। जिन लोगों ने दंगों को रोकने की कोशिश की है उनको हाईलाईट करने की बजाय वर्ग विशेष पर अत्याचार की खबरे दिखाना पीतपत्रकारिता से भी नीचे का काम है। हमें अविलम्ब आत्म-चिन्तन करके अपने आप पर लगाम लगानी चाहिए।

जीतेन्द्र जितांशु
jjitanshu@yahoo.com

पत्रिका का ताना-बाना

संपादक : जीतेन्द्र जितांशु
9231845289

सम्पादकीय सलाहकार

यदुनाथ सेउटा

उप-सम्पादक

तितिक्षा

मिनाक्षी सांगानेरिया

विशेष संरक्षक

राजेन्द्र प्रसाद रुइया (अमेरिका)

डीटीपी, लेआउट तथा भूल-सुधार

रमेश कुमार कुम्हार

राजेश्वर राय, मारिया शमीम

कवर पेज के कलर का चुनाव :

उषा सिंह, दिल्ली

संरक्षक मंडल :

आरती चक्रवर्ती

एच॰ विश्ववाणी, शिवेन्द्र मिश्र

सभी अवैतनिक हैं

हमारी वेबसाईट
www.sadinama.in

इंटरनेट पर
पत्रिका यहाँ से खरीदें-
www.notnul.com

रचनाएँ तथा मनीऑर्डर भेजने का पता :

संपादक - सदीनामा
Purbayan
38E, Prince Bakhtiar Sah Road
Kolkata - 700 033
West Bengal

E-Mail : sadinama2000@gmail.com

अब सदस्य बनना हुआ और आसान

SADINAMA

PUNJAB AND SIND BANK

IFSC CODE : PSIB0000377 • Current Account No. 03771100200213

Bhawanipore Branch, Kolkata (West Bengal)

PLZ. SMS TO Inform - 9231845289 to

YOUR FULL POSTAL ADDRESS & Transaction No. & Date

लघु कथाएं

बांग्ला कथाकार सनत बसु की दो लघुकथाएँ

एक - दुर्घटना या हत्या

हिन्दी अनुवाद :-
प्रेम शर्मा, नागेर बाजार,
कोलकाता

धनी परिवार का एक किशोर। बान्धवी के जन्मदिन की पार्टी में मारा गया। जाँच पड़ताल के पश्चात पुलिस ने इसे दुर्घटना माना। परिवार का मानना है कि यह खून है। इसको लेकर मीडिया में हलचल मची हुई है। दर्जन भर बुद्धिजीवी सड़क पर उतर आए हैं। गायन.... मोमबत्ती। 'जोदि तोर डाक शुने केउ ना आसे तबे....' (डाक तुम्हारी सुनके कोई न आए तो.....)

किस गीत का क्या-क्या उपयोग! हाय!

हर सुबह अखबार को ध्यान से पढ़ना... एक एक अक्षर चाट जाना - भवतोश सेन का नशा है। यहाँ तक कि विज्ञापन भी नहीं छोड़ते। पत्नी सुलेखा इस बात से कई बार नाराज भी हो जाती है। पचहत्तर पार करने पर भी इतनी देर तक अखबार पढ़ने की क्या जरूरत है। वैसे भी आँखों की नजर कमजोर है। इससे तो बेहतर हो - यदि बरामदे में खुली हवा में बैठकर अपनी आँखों को आराम दें। भवतोष को यह बात बिल्कुल नापसन्द है।

– लेख समझ में आया? परिवार के हाथों पहले ही लड़के का खून हो चुका है।

– मतलब ? सुलेखा कुर्सी खींचकर बिस्तर के सामने लाकर बैठ जाती है।

– सत्रह वर्ष की आयु में ही शराब पीता था। सारी रात बान्धवी के साथ मोबाइल पर बातचीत... परिवार आपत्ति नहीं करेगा?

– यह सब तो बड़े लोगों का कल्चर है। तुम नहीं समझोगे?

– कल्चर या गन्दा कल्चर। बान्धवी के जन्मदिन पर जाने के लिए अठारह सौ रुपए। इतना पैसा कहाँ खर्च हुआ - माँ पूछेगी नहीं।

– उन लोगों के लिए इतने पैसों का कोई महत्व ही नहीं है। नामी स्कूलों में पढ़ते हैं, गाड़ी में जाते हैं। रेस्तरां में मँहगा खाना..... पॉकेट में कीमती सेलफोन। माँ बाप के पास बहुत पैसा है। यह सब मॉड सोसाइटी की बात है। हम सब पुराने लोग हैं। इन बातों के बारे में में सोचकर दिमाग खराब करना बेकार है।

एक समय बांग्ला भाषा की अध्यापिका रही सुलेखा सेन का स्पष्ट जवान था।

भ – मैं किसी भी तरह यह स्वीकार नहीं कर पा रहा हूँ। जिस लड़की का जन्मदिन था उसके पिता कवि हैं। माँ की मृत्यु तीन दिन पहले हुई है... फिर भी अपने ही घर पर पार्टी... शराब.... खाना-पीना... शोरगुल।

भवतोश का मन आक्रोश से भर उठता है।

सु – क्या कहना चाहते हो... कहो तो!

इस बार सुलेखा की आवाज में भी आक्रोश झलक रहा था।

भ – इस तरह के अभिभावकों को तो जूतें मारने चाहिए। अपनी सन्तान को जो कन्ट्रोल नहीं कर सकते वे कैसे माँ बाप! माँ बनने के लिए सन्तान को जन्म देना ही पर्याप्त नहीं। उसे इन्सान बनाना होता है... एक सभ्य नागरिक बनाना होता है।

भवतोश बिस्तर छोड़कर नीचे उतरते हैं और बरामदे में जाकर बैठ जाते हैं।

भ – अपनी बकवास बन्द करें। समाज अब बहुत बदल गया है। आधुनिकता की परिभाषा भी अब पहले जैसे नहीं रही 'भद्र' और 'सभ्य' का अर्थ भी पहले जैसा नहीं रहा। हमारी बात सुनने वाले अब लोग